अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – पाँचवीं कक्षा (5 जनवरी, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :– **10x1=(10)**

(a) पाँचवें छठें देवलोक की अवगाहना है –

क. 500 धनुष　　ख. 5 हाथ

ग. 6 हाथ　　घ. 7 हाथ　　(　　)

(b) वायुकाय में कितने योग पाए जाते हैं –

क. 3　　ख. 2

ग. 5　　घ. 4　　(　　)

(c) नवमें गुणस्थान में क्रियाएं पायी जाती हैं –

क. 21　　ख. 15

ग. 14　　घ. 16　　(　　)

(d) कौनसे सूत्र में आत्मा का थोकड़ा चलता है –

क. उत्तराध्ययन　　ख. नंदीसूत्र

ग. आचारांग　　घ. भगवती　　(　　)

(e) चारित्र आत्मा पायी जाती है –

क. 1 से 14 गुणस्थान　　ख. 6 से 14 गुणस्थान

ग. 1 से 13 गुणस्थान　　घ. 1 से 10 गुणस्थान　　(　　)

(f) सन्नी तिर्यंच मरकर कहां उत्पन्न होते हैं –

क. उत्कृष्ट आठवें देवलोक　　ख. उत्कृष्ट छठें देवलोक

ग. उत्कृष्ट चौथे देवलोक　　घ. उत्कृष्ट दूसरे देवलोक　　(　　)

(g) चतुरिन्द्रिय में द्रव्येन्द्रियां पायी जाती हैं –

क. 4　　ख. 6

ग. 8　　घ. 2　　(　　)

(h) एक बार चार अनुत्तर विमान में देव रूप में उत्पन्न होने वाले जीव भविष्य में अधिकतम कितने भव कर सकते हैं –

क. 15　　ख. 13

ग. 10　　घ. 8　　(　　)

(i) किस कर्म के उदय से द्रव्येन्द्रियां प्राप्त होती हैं –

क. मोहनीय　　ख. वेदनीय

ग. नाम　　घ. आयु　　(　　)

(j) किस शरीर में द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं –

क. वैक्रिय　　ख. तैजस

ग. कार्मण　　घ. अशरीरी　　(　　)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में लिखिए – **10x1=(10)**

(a) चौथी नारकी में एक नील लेश्या पायी जाती है। .....

(b) चन्द्र विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम है। .....

(c) युगलिक मनुष्य में तीन वेद पाए जाते हैं। .....

(d) बारहवें गुणस्थान में 12 परीषह होते हैं। .....

(e) पांचवें गुणस्थान में 18 लाख जीवयोनियाँ पायी जाती हैं। .....

(f) उपयोग आत्मा सिद्ध और संसारी सभी जीवों के होती है। .....

(g) त्रिकालवर्ती आत्मद्रव्य को द्रव्यात्मा कहते हैं। .....

(h) आराधक साधु व आराधक श्रावक मरकर वैमानिक देवलोक में ही जाते हैं अन्य गतियों में नहीं जाते। आराधक साधु तो मोक्ष में भी जा सकते हैं। .....

(i) पांच अनुत्तर विमान को छोड़कर अन्य सभी जीवों के भेदों में अतीत और पुरक्खेड़ा की अपेक्षा अनन्त द्रव्येन्द्रियां हो सकती हैं। .....

(j) एक बार आराधक बना हुआ जीव बीच के भवों में विराधक नहीं बन सकता। .....

प्र.3 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए – **10x1=(10)**

(a)	तेउकाय की उत्कृष्ट स्थिति	(क) पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग	.....
(b)	वायुकाय की उत्कृष्ट स्थिति	(ख) तीन पल्योपम	.....
(c)	तीसरे देवलोक के देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(ग) 3 अहोरात्रि	.....
(d)	चौथे देवलोक के देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(घ) सात सागर झाझेरी	.....
(e)	स्थलचर की उत्कृष्ट स्थिति	(च) 3 हजार वर्ष	.....
(f)	खेचर की उत्कृष्ट स्थिति	(छ) पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग	.....
(g)	देशचारित्र	(ज) चौदहवां गुणस्थान	.....
(h)	तियालीस हेतु	(झ) छठा गुणस्थान	.....
(i)	चौदह योग	(य) तीसरा गुणस्थान	.....
(j)	छह आत्मा	(र) पांचवां गुणस्थान	.....

प्र.4 मुझे पहचानो – **10x2=(20)**

(a) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 49 अहोरात्रि है। .....

(b) मेरी जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त है। .....

(c) मैं प्राप्त सम्यक्त्व को छोड़कर मिथ्यात्व में प्रवेश करने के पूर्व की दशा में होने वाली अवस्था वाला गुणस्थान हूँ। .....

(d) मैं वह गुणस्थान हूँ , जिसमें मात्र संज्वलन लोभ कषाय का सूक्ष्म रूप से उदय (विपाकोदय) रहता है। .....

(e) मैं वह गुणस्थान हूँ जिसकी प्राप्ति मोहनीय कर्म की सभी प्रकृतियां क्षय होने से होती है। .....

(f) मैं ऐसी आत्मा हूँ जिसमें 1 से 10 गुणस्थान पाए जाते हैं। .....

(g) मैं मरकर जघन्य पहले देवलोक में उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्ध में उत्पन्न होता हूँ। .....

(h) मेरे चार द्रव्येन्द्रियां होती हैं। .....

(i) हम भविष्य में आठ ही द्रव्येन्द्रियां करेंगे। .....

(j) मुझमें जीव अनन्त होते हुए भी वर्तमान में द्रव्येन्द्रियाँ असंख्यात ही होती हैं। .....

प्र.5 निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक–दो वाक्यों में दीजिए – **9x2=(18)**

(a) पांच स्थावर में योग लिखिए।

.....

.....

.....

(b) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में समुद्घात लिखिए।

.....

.....

.....

(c) गुणस्थानों में लेश्या द्वार को समझाइए।

.....

.....

.....

(d) गुणस्थानों में निमित्त द्वार को समझाइए।

.....

.....

.....

(e) वीर्य आत्मा में कौन–कौनसी आत्मा की नियमा एवं भजना है?

.....

.....

.....

(f) कषाय आत्मा को समझाइए।

.....

.....

.....

(g) पांच पदवियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(h) कम से कम 9 द्रव्येन्द्रियां जहां भविष्यकाल की अपेक्ष कही है उसे किस प्रकार समझना चाहिए?

.....

.....

.....

(i) पांच अनुत्तर विमान में कौन जा सकता है?

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन–चार वाक्यों में दीजिए – (कोई आठ) **8x4=(32)**

(a) तीन विकलेन्द्रिय और असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में गति–आगति बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) गर्भज मनुष्य की स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) पहले से छठें गुणस्थान में मार्गणा द्वार को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) उपशम समकित के चार भंगों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) अप्रमत्त संयत गुणस्थान का लक्षण एवं फल बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) गुणस्थानों में भाव द्वार को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) भव्य द्रव्य देव तथा असंयत भव्य–द्रव्य देव को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) पहले देवलोक से नव ग्रैवेयक तक एक–एक देव में स्वस्थान और परस्थान की अपेक्षा द्रव्येन्द्रियां बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) क्षायिक समकित प्राप्ति की प्रक्रिया के चारों भंगों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....